

ब्रह्मा

आचार्य सानन्द जी

प्रतीकों की उपासना

प्रतीकों की उपासना कक्षा में आप सभी का स्वागत है। पीछे हमने भगवान शिव के प्रतीकात्मक व्यक्तित्व पर विचार किया वेद के मन्त्रों के द्वारा उसको समझने का प्रयास किया। प्रतीक कैसे व्यक्ति को सरल ढंग से शिक्षा देने में सक्षम होता है और प्रतीकों से किस प्रकार से व्यक्ति आसानी से जीवन के गूढ़ तत्वों को समझ लेता है वो हमने देखा। जिस तत्वों को समझने के लिए बड़े-बड़े शास्त्र पढ़ने की जरूरत होती है उस महान तत्व को समझने के लिए 100, 200, 500 पृष्ठों की कई पुस्तकें पढ़ने की जरूरत होती है। लेकिन एक ऐसा शिक्षा का सरल स्रोत है कि आदमी उसको देखकर उसपर विचार करके वैसी शिक्षा अपने अन्तःकरण में उतार सकता है और अपने जीवन को उस प्रतीक के आधार पर निर्माण कर सकता है। क्योंकि प्रतीक प्रेरणा का स्रोत है और प्रतीकात्मक प्रेरणा जब व्यक्ति को मिलती है तो उसे याद नहीं रखना पड़ता तो वो उसे याद रह जाती है। दुनिया में कहीं पर भी आप जायेंगे तो सर्वत्र कहीं न कहीं आपको भगवान शिव का चित्र भगवान की शिव की प्रतिमा, मूर्ति मिल जायेगी और उसके प्रतीक में, उसके चित्र में, आकृति में जो प्रतीक छिपे हैं उन प्रतीकों में देखते ही जीवन को कैसे निर्माण करना है ये समझ में आ जायेगा वैसे ही हमने कल भगवती सरस्वती पर विचार किया था विगत बैठक में। भगवती सरस्वती का मतलब है भगवती-भागवती। भगवान की जो वाणी है वो भगवती है। भगवान की वाणी वेदवाणी है वेदों की वो ऋचाएं जिसमें संसार का सत्य स्वरूप समाया हुआ है। संसार की जितनी भी जड़ चेतन वस्तुएं हैं उनका जो स्वरूप है, उनके गुण, कर्म, स्वभाव है उनका पूर्ण ज्ञान कराने वाली वेद की ऋचाएं हैं। क्योंकि संसार को भगवान ने बनाया है इसलिए संसार का ज्ञान भगवान ही दे सकता है पूरा-पूरा जो जैसी चीज है वैसा ज्ञान वही दे सकता है जिसने उसे बनाया है। तो भगवान ने उसका ज्ञान वेद की ऋचाओं में दिया। वो जो ऋचाओं के अन्दर ज्ञान है वो सृष्टि के आधे में चार रेशों के हृदय में भगवान ने उत्पन्न किया। मानो उनके हृदय में उनके मन में भगवान ने बोला। जैसे अकस्मात हमारे भीतर से कोई बात स्फुटित होती है, कोई बात हमारे भीतर अचानक उत्पन्न हो जाती है और हम सहज एकदम महसूस करते हैं अरे ये बात तो मेरे ध्यान में

कभी आई नहीं, एकदम चौंक जाते हैं जैसे आकाश में बिजली कौंध गई हो और झट से चली गई हो। तो ऐसा होता है कि हमारी बुद्धि में एकदम ऐसा स्फुटिकरण होता है। ऋषियों के हृदय में भगवान ने ऐसे ही चारों वेदों के मन्त्रों का ज्ञान दिया। तो भगवती सरस्वती, भगवान की वाणी और वो वाणी भगवान की कैसी है सरस्वती। स यानि अच्छे रस यानि अमृत वती यानी वाली। वो भगवान की वेदवाणी कैसी है, वो ऋचाएं, वो मन्त्र कैसे हैं जो पवित्रता के प्रेम से जो कल्याण की इच्छाओं से और जो जीवों के उत्तम मार्गदर्शन से भरी हुई है जो प्रेरणाओं का असीम स्रोत है ऐसी वो भगवान की वाणी है तो उस भागवती वाणी का नाम ही सरस्वती है जिसका हमने कल अच्छे से विचार किया। आज उसी क्रम में हम एक ओर प्रतीक पर विचार करने जा रहे हैं उस प्रतीक का नाम है ब्रह्मा जिसको बचपन से हम देखते आए हैं उनको तो नहीं देखा उनकी मूर्ति देखते आए हैं। मूर्ति में क्या देखते हैं कि एक ऐसा व्यक्ति हैं जिसके चार सिर हैं, चार मुंह हैं, चार नाक हैं, चार मुख हैं अब कभी-कभी मैं स्कूल में जब बच्चों में होता हूँ तो उनको हंसाने के लिए थोड़ा सा वो ओर भी रुचि से जुड़ जायें इसलिए थोड़ा मनोविनोद भी कर लेता हूँ उन्हें कहता हूँ मैं कि बच्चों ये बताओ किसी आदमी के चार सिर हों यानि आठ आंखें हों, आठ कान हों, चार मुँह हों और चारों मुँह पर एक-एक नाक हो वो आदमी सोएगा कैसे वो तो जिधर सोएगा उधर उसकी नाक बीच में आ जाएगी नींद कैसे आएगी उसको? बताओ। दूसरा वो चारों मुँह से खाएगा या एक मुँह से खाएगा। हमारे शरीर के अन्दर जो सृष्टिक्रम के अनुसार जो मन काम करता है वो मन एक समय में एक काम करता है कई काम नहीं कर सकता। ऐसा कभी सम्भव है कि एक आदमी के चार सिर हों, हाँ कई अपवाद में हम सुनते आए हैं और हॉस्पिटल में देखते भी हैं कि कुछ बच्चों के अंग विकार हो जाता है पांच की जगह छः उंगलियां लेकिन जो छठी उंगली होती है वो पूर्ण नहीं होती विकसित नहीं होती वो अविकसित ही होती है तो इसलिए ब्रह्मा के चार मुँह या किसी व्यक्ति के चार मुँह मानना ये बहुत कोई समझदारी की बात नहीं है। तो उस विज्ञान को यहां बड़े अच्छे तरीके से खोलकर समझाया है कि मनुष्य को जीवन में कैसा होना चाहिए। वास्तव में व्यक्ति ब्रह्मा के, इस सृष्टिनिर्माता के विज्ञान को कब समझ पाता है ठीक-ठीक जब वो इस चित्र के अनुरूप अपने आपका निर्माण कर लेता है। वो कैसे तो देखिये अब हम इसपर विचार करते हैं। इसके रहस्य को समझने का प्रयास करते हैं। चतुर्थ मुख ब्रह्मा आत्मा का पिण्ड, आत्मा का और परमात्मा का ब्रह्माण्ड परमात्मा का शरीर है। आत्मा का

जो पिण्ड है जिसमें आत्मा रहती है वो आत्मा का शरीर है और परमात्मा को जो ब्रह्माण्ड है वो ब्रह्माण्ड परमात्मा का शरीर है। यह प्रतीक अनुकरण के लिए हैं जो इसका अनुसरण करता है वह भी मानो ब्रह्म बन जाता है या ब्रह्म जैसा बन जाता है। एक दृष्टि से चारों वेदों का ज्ञान प्राप्त करके उनमें जो ज्ञान बताया है उस ज्ञान के अनुरूप ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों का प्रयोग करके और अन्तःकरण का उस प्रकार से प्रयोग करके व्यक्ति अपने आपको उस ब्रह्मज्ञान के स्रोत के समान कर सकता है। कब जब वो व्यक्ति वेदों का प्राप्त कर लेता है चारों वेदों का और उन वेदों के ज्ञान के अनुरूप नेत्रों से, कानों से, वाणी से, रसना से, नासिका से और मन के विचारों से वो जब वेदों में बताए बातों के अनुसार जीवन को जीने लग जाता है तो उसका जीवन कमल के सदृश हो जाता है। इस चित्र में देखिए आप एक हाथ में कमल है और ब्रह्मा का आसन, ब्रह्मा का वाहन, जिसपर ब्रह्मा बैठते हैं वो कमल है। कमल के बारे में सुना जाता है संस्कृत में कमल को पंकज कहते हैं इसलिए कहते हैं पंकेजायती पंकज जो पंक से उत्पन्न हो पंक कहते हैं कीचड़ को। तो जो कीचड़ से उत्पन्न होकर कीचड़ से अलग हो जाए कीचड़ में भी कीचड़ से अलग रहे उसका नाम पंकज है। जो जल में रहे और जल से अलग रहे वो पंकज है। तो ये मनुष्य इस संसार में, संसार में पंक क्या है ये संसार ही पंक है, राग है, द्वेष है, काम है, क्रोध है, लोभ है, मोह है, ईर्ष्या है, छल है, कपट है। वेदों में जो जीवन के निर्माण की शिक्षा दी है उस शिक्षा को जीवन में कैसे व्यवहारिक रूप से जीया जाए उसका एक सरल सा प्रतीकात्मक दर्शन विज्ञान यहां पर प्रस्तुत किया है। और जो ये ब्रह्मा के चार मुंह आप देख रहे हैं ये चारों चार वेदों के प्रतीक हैं।

कोई भी काम चार प्रक्रियाओं से करने पर ही पूर्णता को प्राप्त होता है उनमें से एक प्रक्रिया है कि पहले जिस वस्तु का पाना है, जिस काम को करना है उसका ज्ञान प्राप्त हो। उस व्यक्ति के ज्ञान प्राप्त करने का नाम ज्ञानकाण्ड है। पर वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त चारों वेदों में से ऋग्वेद कराता है इसलिए उस ऋग्वेद को ज्ञानकाण्ड कहा गया है। किसी वस्तु को प्राप्त करने के लिए जब उसका ज्ञान प्राप्त हो जाता है तो फिर उसके बाद में उस वस्तु को पाने के लिए जिसको जाना है जिसके बारे में ज्ञान प्राप्त हुआ है कर्म करना पड़ता है। तो उस कर्म के विज्ञान को बताने वाला जो दूसरा वेद है उसका नाम यजुर्वेद है इसलिए उसको कर्मकाण्ड कहा गया है। उसके बाद में जब आपने उस वस्तु को पाने के

लिए कर्म करना प्रारम्भ कर दिया अब ज्यों-ज्यों कर्म होता जायेगा त्यों-त्यों आप उस वस्तु के निकट पहुंचने लगेंगे उसके समीप जाने लगेंगे जितना कर्म तेजी से होता जाएगा उस कर्म के परिणामस्वरूप उस वस्तु के, उस उपलब्धि के आप धीरे-धीरे पहुंचते चले जायेंगे। और जब आपका कर्म पूर्णता को प्राप्त होगा तो उस वस्तु से आप युक्त होंगे, वो वस्तु आपके हाथों में आपको प्राप्त होगी, उस वस्तु या उस उपलब्धि से आप सराबोर होंगे जब वो कर्म आपका पूर्ण हो जायेगा। तो कर्म की पूर्ति, ज्ञान की पूर्ति पर ज्ञानकाण्ड हो गया, तो ज्ञान की पूर्ति होने पर फिर कर्म होगा, कर्म की पूर्ति होने के बाद में फिर उस वस्तु की प्राप्त से जो सुख मिलेगा, उपलब्धि से जो सुख मिलेगा और जो उस सुख में जो आनन्द होगा उसका नाम उपासनाकाण्ड है। उसको कहा सामवेद से। अब उसके भी बाद में एक ओर भी हैं कि जो उपासना कर रहे हैं, उपासना में बैठे हैं भगवान के आनन्द में लीन हैं उसका परिणाम क्या होगा, उपासना करते-करते उसका परिणाम क्या होगा उसका फल क्या होगा तो कहा है वो है विज्ञान। यानि उपासना से जिसकी उपासना कर रहे हैं जिसको पाया है उसका उपभोग करने से जो अनुभव होगा जब तक वस्तु मिले नहीं तब तक उसका अनुभव नहीं होता जब वस्तु मिल जाती है तो उसका अनुभव होता है तो वो जो अनुभव है वो अमृत है और उसको कहा विज्ञानकाण्ड। तो विज्ञानकाण्ड को इस चौथी प्रक्रिया को बताया अथर्ववेद वो विज्ञानकाण्ड है। तो जब व्यक्ति इन चार दृष्टियों से अपने हर कार्य को देखता है तो उसका व्यक्तित्व उस उपलब्धि को पूर्णतः पा लेता है तब उस व्यक्ति की स्थिति संसार में कमल के फूल जैसी हो जाती है। ब्रह्मा कौन बनता है जो वृहद् बड़े को जानता है। जो वृहद् बड़े को जानता है उसको ब्रह्मा की प्राप्ति होती है। एक अभिप्राय से ब्रह्मा कहते हैं बड़े को, वृहद् को, ब्रह्माण्ड निर्माता, विधाता को, कण-कण में व्यापक परमेश्वर को। दूसरे अभिप्राय से ब्रह्म नाम ज्ञान का है, ज्ञान का विषय सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड और उसमें निहित अनन्त जड़ वस्तुएं और अनन्त चेतन प्राणिमात्र है। इनका सम्पूर्ण ज्ञान, विज्ञान, सूक्ष्म और स्थूल सब विश्व निर्माता, विधाता द्वारा ऋषि-मुनियों के हृदय में चार वेदों के रूप में प्रदत्त है। चार वेद ही ब्रह्माण्ड निर्माता, ब्रह्माण्ड रूपी देहधारी ब्रह्माण्ड के कण-कण में व्यापक सर्वत्र फैले नियम और व्यवस्थाओं और सूत्रों और समस्त सृष्टि के जर्ने-जर्ने जड़ चेतन पदार्थ मात्र के नाम, रूप के निर्माता उस ब्रह्म, उस ब्रह्माण्ड के निर्माता उस विधाता से भरा हुआ है चारों वेदों के अन्दर जो भी ज्ञान है जो सृष्टि से सम्बन्धित, सृष्टि के नियमों से, व्यवस्थाओं से सम्बन्धित है वो सारा का सारा ज्ञान उस

विश्वविधाता परमेश्वर ने चारों वेदों में भरा हुआ है। उसी बात को यहां पर आलंकारिक ढंग से समझाने का प्रयास किया है। और अलंकार क्या करता है आलंकारिक कथन की ये विशेषता है कि वो बात को कहने का एक सरल ढंग खोज लेता है। एक हम किताब में बात को पढ़ें या किसी के उपदेश को सुनें तो उसको समझने में थोड़ी कठिनाई होती है उतनी सरलता नहीं रहती लेकिन ये प्रतीक, प्रतीक के माध्यम से बात को कहने का तरीका अत्यन्त अद्भुत होता है। ये बात को कहने का ढंग हैं, विषय को सरल बनाने का तरीका है जिसके द्वारा गुरु शिष्य को सरलता से विषय हृदयंगम करा सके और शिष्य भी बात को गम्भीरता से समझ सके। बात में गाम्भीर्य तब आता है जब बात सरल तरीके से कही जाए और वो हृदय में उतर जाए। तो उसी तत्व को कहने के लिए यहां पर एक मानवाकृति की कल्पना की कि मनुष्य को समझाना है तो एक मानवाकृति का ही प्रतीक बनाया जाए और उसमें चार सिर दिखाए, चार मुंह दिखाए वे चारों सिर, वो मुख उनमें वाणी, नेत्र, स्रोत आदि सब दिखाए। शरीर में ज्ञान का केन्द्र मस्तिष्क है और संसार में ज्ञान का प्रमुख स्रोत वेद है। तो उस वेद से इस मस्तिष्क को जोड़ दिया गया और मनुष्य की कृति में किस प्रकार से मनुष्य जीवन में सफल हो इस विज्ञान को समझाया गया। तो यहां पर चार जो सिर हैं जो चार वेदों के प्रतीक हैं। अब इन चार वेदों को जो व्यक्ति जीवन में पढ़ लेता है, इन चारों वेदों को जो व्यक्ति जीवन में जान लेता है, इन चारों वेदों को जो व्यक्ति जीवन में समझ लेता है, इन चारों वेदों को जो व्यक्ति जीवन में उतार लेता है और इन वेदों में जो बताया तदनुसार वो व्यक्ति वाणी से बोलता है, नाक से सूंघता है, कानों से सुनता और और आंखों से देखता है वैसा ही वो मुंह से खाता—पीता है और वैसा ही वो हाथों से कर्म करता है और उसी दिशा में जाता है। तो फिर उस व्यक्ति का व्यक्तित्व उसका जीवन, उसका आन्तरिक स्तर, उसकी सोच—समझ और उसकी आन्तरिक योग्यता कमल के समान हो जाती है जिस प्रकार से कमल कीचड़ में उतर उससे अलिप्त हो जाता है, उससे अलग—थलग हो जाता है और उसके बीच में रहता हुआ उससे अलग रहता है ऐसा ही उस व्यक्ति का व्यक्तित्व हो जाता है जो चारों वेदों को पढ़कर इस संसार को चारों ओर से देखता है, चारों दिखाए, चारों दिखाओं में वेदों की दृष्टि से देखता है और प्रत्येक कार्य को ज्ञानपूर्वक पहले जानता है कि कैसे होगा उसके बाद में उस कार्य को कर्म में लाता है उस कार्य को करना आरम्भ करता है उसके बाद में उस

कार्य की उपलब्धि है उस उपलब्धि को प्राप्त करके उसको अनुभव करता है और उसके अनुभव से जो ज्ञान उत्पन्न होता है उस ज्ञान से फिर अपने बन्धनों को काटता है।

वेदों में जो ज्ञान दिया है वो ज्ञान जीवन को संसार से बांधने के लिए नहीं दिया, संसार से बंधे हुए जीवन को संसार से अलग करने के लिए दिया है। असतो मा सद्गमय – बोले असत को छोड़ो और सत की ओर बढ़ो, तमसो मा ज्योतिर्गमय– अन्धकार की काली रात को छोड़ो और प्रकाश के भोर में प्रवेश करो, मृत्योर्मा अमृतमगमय– मरणधर्मा देह को, मरणधर्मा जीवन को, परिवर्तनशील जीवन को छोड़ो और अपरिवर्तनशील शाश्वत सुख आत्मानन्द को पाकर परमानन्द को पाने की दिशा में आगे बढ़ो। चारों वेदों का जो उद्देश्य है उस उद्देश्य को पहले व्यक्ति जानता है ऋग्वेद के द्वारा मानो। ऋग्वेद से जानकर मानो यजुर्वेद को आधार बनाकर फिर उसे पाने के लिए वो प्रयत्न करता है, कर्म करता है और कर्म करता है उसके बाद में फिर उस वस्तु को पाकर उसको भोगता है, उसका अनुभव करता है और अनुभव से जो उसको सार निकलता है, सार तत्व सामने आता है उस सार के आधार पर वो विज्ञानकाण्ड विशेष उपलब्धियों को प्राप्त करता है। अब विशेष उपलब्धि क्या है जरा समझो। ये जो संसार है, जो ब्रह्माण्ड है जो ब्रह्म का शरीर है और जो ये क्षुद्र रूप में, इकाई रूप में मनुष्य का शरीर ये पिण्ड है। आत्मा का पिण्ड और परमात्मा का यह ब्रह्माण्ड है यही जानने योग्य है। आत्मा पिण्ड को जानकर परमात्मा के ब्रह्माण्ड को जान लेता है। चारों वेदों में इसी ब्रह्माण्ड के बारे में बताया है, इसी पिण्ड के बारे में बताया है और इसी जगत इस दुनिया के बारे में बताया है कि संसार में उसे किन तत्वों से क्या लाभ लेना है सारे संसार का जो ज्ञान है क्या उसे करना है, कैसे उसे करना है सारा ज्ञान उसे मानो ऋग्वेद से मिल जाता है। अब उस ज्ञान को पाकर, ज्ञान क्या है कि उसे धर्मपूर्वक वस्तुओं का ग्रहण करना है उसका उपभोग करना है उसे अपने शरीर को, प्रकृति को जानना है, परमात्मा, आत्मा को जानना है और जानकर संसार रूपी बंधन से मुक्त होना है और मुक्त होकर परमात्मा को पाना है, मुक्ति, मोक्ष को प्राप्त करना है। मोक्ष उसे कहते हैं जिसमें मोह का पूर्ण रूप से क्षय हो जाए। मोक्ष मतलब मोह का पूर्ण रूप से क्षय। जब पूर्ण रूप से मोह का क्षय होगा तभी व्यक्ति का मोक्ष होता है और यह पूर्णता विज्ञान में आती है तो देखिए क्या कह रहे हैं कि ऋग्वेद से यानि ज्ञानकाण्ड से वो पहले सारे जीवन को जान ले जीवन को जानने के बाद में जो ज्ञान में

बताया गया कि उसे जीवन को कैसे जीना है बस जीवन को जीना स्टार्ट कर दे। संसार भगवान ने बनाया है, ये शरीर भी भगवान ने बनाया है इसकी सफलता, सार्थकता किसमें है ये उपदेश भी भगवान ने दिया है तो उस उपदेश के अनुरूप इस जीवन को जीना प्रारम्भ करें, जानकर, जीना प्रारम्भ करें और उसके बाद में जीते-जीते जो-जो उपलब्धियां उपलब्ध होती जाएं उनको अनुभव करें। उनको अनुभव करके और फिर अनुभव करने के बाद उसका सारांश क्या निकला, सार क्या निकला इतना जन्मभर राग करते रहें उसका सार क्या निकला, क्रोध करते रहे उसका सार क्या निकला, लोभ करते रहें उसका सार क्या निकला, मोह करते रहें उसका सार क्या निकला। बच्चे थे बड़े हुए, बड़े होकर जवान हो गए, जवान हो गए विवाह शादी हुई बच्चे पैदा किए उसका सार क्या निकलता, खुद बूढ़ हो गए क्या सार निकला और चारपाई पर मरण शैया पर लेटे हुए हैं क्या सार निकला। आदमी अज्ञान की अवस्था में है ज्ञान उसने अभी प्राप्त नहीं किया तो कैसी दशा है उसको अनुभव करें, अब ज्ञान प्राप्त कर लिया है ज्ञान प्राप्त करने के बाद में आज कैसी उसे जीवन की अनुभूति हो रही है ज्ञान पाने के बाद उसे अनुभव करें। दोनों स्थितियों का विश्लेषण करें, पूर्व का अनुभव भी है ये भी अनुभव है तो अन्तर स्पष्ट हो जाएगा ज्ञान को पाने के बाद में कितना सुख है और ज्ञान न प्राप्त करने के कारण पहले जीवन में कितना दुःख था। छोटी-छोटी बातों में त्रस्त है, धन-वैभव के पीछे रात-दिन भाग रहा है, ठीक है, काम में, विष्णु में, वासनाओं में भयंकर रूप से फंसा हुआ है, एक बार खाया, एक बार भोगा, एक बार अनुभव किया उसके बाद में भी तृप्ति कभी पूर्ण रूप से नहीं मिली। दस बार भोगा, दस बार खाया-पीया उसके बाद में भी तृप्ति नहीं हुई। बीस बार हुआ, तीस बार हुआ, पचास बार हुआ, सौ बार हुआ पहले वाली ही हर बार स्थिति है। खीर जब खा रहे थे तब स्वादिष्ट लग रही थी लेकिन स्वाद-स्वाद में ज्यादा खा गए बाद में पेट दर्द कर रहा है। तो सारांश क्या निकला 500 रुपये किलो कोई विशेष फल खरीदा खाने के बाद में वही स्थिति जो खाने से पहले थी थोड़ी देर जीभ का स्वाद, थोड़ी देर चमड़ी का स्वाद, थोड़ी देर भोगों का स्वाद सारांश क्या निकला तो विज्ञानकाण्ड है वो सारांश का कांड है इसलिए हमारे यहां की व्यवस्था क्या है कि 25 साल गुरुकुल में पढ़ाई करो। वहां से आने के बाद में जो जीवन में पढ़ाई किया है, गुरुकुल में पढ़ा है, जीवन और जगत के बारे में उसको जीना शुरू कर दें किसके लिए अनुभव के लिए, अनुभूति के लिए जीना शुरू कर दें इसलिए गुरुकुल से आते ही गृहस्थ में जाए, जो पढ़ा है उसे संसार में जीकर

देखें नहीं तो ज्ञान कच्चा रह जाएगा अपरिपक्व रह जाएगा। समझ विकसित नहीं होगी, छूटेगा नहीं चीजों से, चीजें छोड़ रखी हैं लेकिन चीजों से उठेगा नहीं चीजें परिस्थितियां अनुभव जो सिखाते हैं वो ज्ञान नहीं सिखाता इसलिए कहते हैं जहां न पहुंचे रवि वहां पहुंचे कवि। रवि यानि ज्ञान यानि प्रकाश, जब रवि उदित होता है तो सब जगह प्रकाश सब चीजें दिखाई देने लगती है तो ज्ञान से सब कुछ नजर आता है लेकिन कर्म के बाद वो ज्ञान कभी पूर्ण अपने उद्देश्य तक व्यक्ति को नहीं पहुंचा पाता जहां न पहुंचे रवि वहां पहुंचे कवि। तो जहां रवि का प्रकाश नहीं पहुंचता जहां ज्ञान का जो ज्ञान दिखा नहीं सकता, अनुभव नहीं करा सकता अब गुड़ के बारे में हजारों किताबें हमने पढ़ ली लेकिन उसके बाद में भी गुड़ का अनुभव तो किताबें पढ़ने से नहीं होगा, न ही किसी व्यक्ति के हजार तरीकों से समझाने से होगा गुड़ का अनुभव तो गुड़ की डली मुंह में रखने से ही होगा चाहें कितना ही ज्ञान प्राप्त कर लें। तो कर्म के बिना ज्ञान अधूरा है और उपासना में उसकी अनुभूति होती है तो उपासना के बिना कर्म अधूरा है क्योंकि अनुभूति ही मुक्ति का आधार है तो पहले व्यक्ति क्या करेगा, पहले व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करेगा, गुड़ का स्वाद सबसे अलग है और गुड़ को बिना खाये वो हो नहीं सकता तो गुड़ को पाने के लिए पुरुषार्थ करेगा, जानने के बाद गुड़ को प्राप्त करेगा, प्राप्त करने के बाद में फिर उसको जीभ पर रखेगा ये उपासना है, जो उसे पाने के लिए जो यहां से वो वहां गया जहां गुड़ मिलता है ये तो कर्मकाण्ड हो गया। अब गुड़ मिल गया तो उसको जीभ पर रखा और उसको अनुभव कर रहा है ये उसका उपासना काण्ड हो गया। उपासना से ज्ञान हुआ क्या ज्ञान हुआ ओ हो! गुड़ का स्वाद ऐसा है सच में चाहे मैं हजारों की लाखों किताबें पढ़ लेता लेकिन कभी मुझे ये अनुभूति किताबों के ज्ञान से नहीं होती, किताबों का ज्ञान मुझे ये रास्ता तो बताता लेकिन ये अनुभूति नहीं करवा पाता ये अनुभूति तक मुझे ज्ञान ने ही पहुंचाया है, ज्ञान नहीं होता तो यहां तक मैं आता कैसे कि गुड़ का अनुभव तो तभी होगा जब गुड़ खाया जायेगा। ये ज्ञान यदि किताब से, वेद से, शास्त्रों से नहीं मिलता गुरुजनों से तो मैं गुड़ तक पहुंचता ही नहीं। इसलिए ज्ञान सबसे पहले सोपान है जीवन के कल्याण का उसका दूसरा सौपान है कर्म, ज्ञान हो गया तो गुड़ को पाने के लिए अब कर्म करो। कर्म किया तो तुम दुकान तक पहुंच गये गुड़ खरीद लिया और खरीदकर मुंह पर रखा तो ये उपासनाकाण्ड है, उपासना काल आ गया है कि उसे अनुभव कर रहा है, अब अनुभव कर लिया तो अनुभव करते ही पता लग गया ओ हो! गुड़ का अनुभव ऐसा है ये

सबसे निराला है हो गया पक्का। अब अनुभव से जो ज्ञान मिला उसको शास्त्र में कहते हैं प्रज्ञा ऋतम्भरा मेधा बुद्धि। अब ये जो अनुभव हुआ, इस अनुभव से होगी मुक्ति। अब ये अनुभूति वाला जब ज्ञान हो गया जब आपके पास तो फिर आपको कोई भ्रमित नहीं कर सकता, बहला-फुसला नहीं सकता, कि ये लो ये दूसरी चीज लो गुड का स्वाद इसमें भी आ जायेगा। गुड का स्वाद दुनिया कि किसी चीज में नहीं आएगा वो गुड में ही आएगा। तो जो मुक्ति वाला, आत्मा वाला जो आनन्द है वो संसार की किसी चीज में नही आएगा न वो स्त्री को पुरुष में आएगा न पुरुष को स्त्री में आएगा न वो स्त्री पुरुषों को संसार की खाए-पीए वस्तुओं में आएगा न आभूषणों में आएगा न धन-वैभव में आएगा वो संसार की किसी चीज में नहीं आएगा। वो तो आत्मा को जब आत्मा जानेगा और आत्मा जब परमात्मा को जानेगा तभी वो जिस सुख की कोई सीमा नहीं है उसकी अनुभूति होगी तो जहां न पहुंचे रवि वहां पहुंचे कवि और जहां न पहुंचे कवि वहां पहुंचे अनुभव। इसलिए हमारी जो वर्णाश्रम व्यवस्था है, जो आश्रम व्यवस्था है वो सब अति वैज्ञानिक है। 25 साल तक विद्यार्थी ज्ञान प्राप्त करे, 25 साल के बाद में जो ज्ञान प्राप्त किया है उनको कर्म में लाए, उनसे कर्म करें, ज्ञान ने जो बतलाया है उसे जीवन में करके देखे और उसे जीवन में करके देखेगा तो अनुभव के करीब पहुंचेगा वो चीजें सामने होंगी जिनको पाने के लिए उसने कर्म किया है ज्ञानपूर्वक। तो ज्ञानपूर्वक कर्म होगा तो उपलब्धि सामने होगी, भोग सामने होंगे और फिर भोगों को भोग कर देखे। अब ज्ञान क्या कहता है कि भोगों को भोगना है, भोगों से मुक्ति के लिए न कि भोगों में आसक्ति, भोगों में बंध जाने के लिए। भोगानभुग्तावयमे..... — ये नहीं होना चाहिए कि भोग मैंने नहीं भोगों ने मुझे भोग लिया। तपानतपतावयमेवतपता— तप को हम तपें पुरुषार्थ हम करें ये न हो कि हमें ही तपा दिया गया है। कालोनयातोवयमेवयातो— काल के रथ पर बैठकर हम अपनी यात्रा पूरी करें न कि हम एक जगह खड़े रहें और काल हमारी मृत्यु लेकर आए सामने तो विद्यार्थी 25 साल ज्ञान प्राप्त करता है वो इसी चित्र के समान व्यक्तित्व का निर्माण करता है और उसके बाद में वो फिर 25 साल ज्ञान के अनुसार कर्म करने में मानो लगाता है। कर्म से जो-जो चीजें उसे मिलती जाती है, उन-उन चीजों को अनुभव करता जाता है। और उसके बाद वो 25 साल कर्म करता है और 25 साल से जितने भी कर्म करने से अनुभव छोटे-छोटे प्राप्त हुए अन्त में वो 50-55 की अवस्था में गृहस्थ छोड़कर वानप्रस्थ में जाता है। अब वो जाकर विश्लेषण करता है कि जो कर्म किया था वो उसके अनुरूप, जो ज्ञान किया था उसके

अनुरूप मैंने 25 साल कर्म किया। अब 25 साल जो कर्म किया उसका अनुभव क्या हुआ उसको फिर डबल अनुभव करता है, विचारता है, उसका सार निकालता है और उसका सार निकालता है सार निकालते-निकालते उस अनुभव से जब ओत-प्रोत होता है, उस अनुभव को जब साक्षात् अपने भीतर अनुभव करता है, सारे जो अब तक ज्ञान के अनुसार जो जीवन में 25 साल जो सभी प्रकार के दसो इन्द्रियों से वस्तुओं को, चीजों को, संसार को, दुनिया को भोगा है उन सबको विचार में लाता है और वानप्रस्थ के काल में बैठकर खूब चिन्तन-मनन करता है, उपासना करता है ये उपासना का काल है अर्थात् ये अनुभूति का काल है और इन अनुभूतियों को कर-करके सार निकाल लेता है कि संसार की वस्तु मात्र परिवर्तनशील हैं और शरीर भी परिवर्तनशील हैं और शरीर में जिन पुर्जों से, जिन अन्तःकरण, बाह्यकरणों से ये ज्ञान हो रहा है वो शरीर, सूक्ष्म शरीर, कारण शरीर, वो अन्नमय कोष, प्राणमय कोष, मनोमय कोष, विज्ञानमय कोष, आनन्दमय कोष, वो चमड़ी से लेकर शुक्रशोणित तक का पूरा देह पूरा शरीर परिवर्तनशील है। वो बाहर ज्ञानेन्द्रियों से लेकर अन्दर चित्त तक ज्ञानेन्द्रियां, कर्मेन्द्रियां, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार सब ये सब परिवर्तनशील है। सब कुछ बदलाव वाला है, सब ये उपासना काल में, वानप्रस्थ काल में जानता है और जानने के बाद सीधा सार निकाल लेता है कि इन सबको जानकरके, इन सबसे अतिरिक्त भिन्न, इनके विपरीत स्वभाव वाली चेतन तत्व आत्मा को जान लेता है और आत्मा को जानकरके जड़ और चेतन को पृथक् करके उस आत्मा को अनुभव करके परमात्मा के मार्ग पर चल पड़ता है उसी का नाम सन्यास है, सन्यास का मतलब विज्ञानकाल। जब विशेष ज्ञान उसे उपासना से प्राप्त हो जाता है तो उसके बाद में सन्यासी हो जाता है यानि आत्मा, परमात्मा को सबको जान लिया है अब जानने लायक कुछ बचा ही नहीं उसी का प्रदर्शन, उसी को बाहर व्यवहार में सन्यासी के वस्त्रों द्वारा वो प्रकट करता है कि देखों मैंने भीतर से जान लिया। क्योंकि व्यवहार से ही व्यक्ति के आन्तरिक कल का उसकी आन्तरिक स्थिति का पता चलता है, व्यवहार ही उसके विद्वान और मूर्ख होने का प्रमाण है, व्यवहार ही ये सिद्ध करता है कि वो अन्दर से कितना ऊँचा, ज्ञान के अनुरूप भीतर से उन ऊँचाइयों को पाया है या नहीं। तो इसलिए सारी जो व्यवस्था है इन चारों चीजों पर टिकी हुई है ये ब्रह्मा के जो चार सिर है ये व्यर्थ नहीं ये व्यक्ति को ब्रह्म बनाते हैं। चार सिर चार वेदों के प्रतीक हैं, जब आदमी की खोपड़ी में जब इन चारों वेदों का ज्ञान चला जाता है तो ये आदमी उन वेदों के ज्ञान के अनुरूप चारों

दिशाओं में, चारों चीजों के बारे में सोचता है किन चारों चीजों के बारे में धर्म के बारे में, हमारे चार पुरुषार्थ हैं, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। धर्मपूर्वक कर्म करता है और धर्मपूर्वक कर्म करता है यानि कामनाओं की पूर्ति के लिए पुरुषार्थ करता है और धर्मपूर्वक जब वो अर्थार्जन करता है, कामनाओं की पूर्ति के लिए द्रव्यार्जन करता है उस द्रव्य को फिर उन कामनाओं की पूर्ति में लगाता है जिन कामनाओं की पूर्ति से उसे मुक्ति मिलती है ये दृष्टिकोण जब व्यक्ति के ज्ञान के मुख्य केन्द्र मस्तिष्क के अन्दर उत्पन्न होता है चारों वेदों का ज्ञान प्राप्त करने के बाद तो फिर मानो वो जीवन को एक आंख से नहीं वो चार वेदों की आंखों से देख रहा है। ज्ञान की दृष्टि से, कर्म की दृष्टि से, उपासना की दृष्टि से और विज्ञान विशेष ज्ञान की दृष्टि से। कुछ जीवन में कर्म ऐसे होते हैं वो बड़े थोड़े पुरुषार्थ की अपेक्षा रखते हैं उनमें साल-दो साल लगता है और उनका अनुभव हो जाता है तो अनुभव वो अनुभव और चार कदम हमारा आगे बढ़ाने में सहायक बनता है। कुछ कर्म ऐसे होते हैं कि उनका पहले ज्ञान प्राप्त करने में ही 20 वर्ष, 50 वर्ष लगते हैं उसके बाद में फिर उनकी उपासना तक पहुंचा जाता है, उनके लिए फिर ज्ञान प्राप्त के बाद कर्म किया जाता है और कर्म के बाद में फिर उपासना का अवसर आता है, उपासना के बाद में फिर अन्त में विज्ञान का अवसर आता है वो कर्म मुक्ति है, वो कर्म ईश्वर की प्राप्ति है, आत्मा का साक्षात्कार है। तो खैर सब बातों का जो सारांश है वो निकलकर ये आता है कि ये जो हमारे सामने प्रतीक है जिसको हमने ब्रह्म कहा, चार मुख वाला ब्रह्मा, तो इसके जो चार मुंह हैं, ये चार शिर हैं ये चार वेदों के प्रतीक हैं जब व्यक्ति के अन्दर चारों वेदों का ज्ञान चला जाता है तो उसका दृष्टिकोण बहुआयामी हो जाता है वो व्यक्ति जीवन को, जगत को यथार्थ में देखने लगता है क्योंकि वेदों में जो संसार का ज्ञान है वो यथार्थ है तो सारे संसार को यथार्थ में देखने लगता है और देखते-देखते जब उसके ये अन्दर ये तत्व विकसित हो जाता है कि जड़ और चेतन अलग है मैं चेतन हूँ और ये संसार सब जड़ है। तो फिर वो जल में कमल की भांति इस संसार रूपी जड़ जगत में चेतन आत्मा को रखते हुए भी इसे अलग रखता है अपने ज्ञान के बल से। तो जैसे ही वेदों का ज्ञान प्राप्त होता है ये दृष्टिकोण उसके अन्दर आता है तो वो व्यक्ति मानो कमल पर सवारी करता है, मानो कमल के समान उसका ज्ञान हो जाता है और इस ज्ञानात्मक दृष्टिकोण के द्वारा जीवन में अलिप्त रहता हुआ वह जीवन को जीता है कमल की भांति इसी तत्व को यहां पर बताया गया है ताकि संसार में, दुनिया में ऐसा कोई अब तक आदमी नहीं हुआ जिसके चार शिर

हों, चार मुंह हो, आठ आंखें हों, आठ कान हों ऐसा कोई व्यक्ति नहीं हुआ तो इसका सारांश यह है कि इस चित्र के माध्यम से हम भी अपने जीवन को इस प्रकार बनाएं कि चारों वेदों का ज्ञान अपने इस मस्तिष्क में अपने चित्त में, अपने ज्ञानकोष में भरें और जीवन को कमल के पुष्प की भांति, कमल की भांति, पंकज की भांति, पंकेजायतिइतिपंकज— कीचड़ से उत्पन्न होकर कीचड़ से अलग तो हो जाता है, जो संसार में हम उत्पन्न हुए हैं, पंचभूतों से हमारा शरीर बना है, अब पंचभूतों के माध्यम से हम व्यवहारिक जगत को अनुभव करने लगे हैं तो इनमें पंचभूतों की बनी सृष्टि में रहते हुए इससे अलग होकर अपनी आत्मा को अनुभव करके परमात्मा को अनुभव करें और जीवन को सफल बनायें। यही इस चित्र का प्रतीकात्मक अर्थ है। तो आज की बैठक को इतना ही रखते हैं शेष पर फिर कभी विचार करेंगे। आगे ओर अब शान्ति पाठ।